# बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 22

धर्मशाला, सोमवार, 27 जूलाई 2015


## नशा निवारण कैंप के लिए जरूरी है गतिविधि निर्धारण

नशानिवारण कैंपों के सफल आयोजन के लिए मरीजों के इलाज से जुड़ी रोजाना की गतिविधियों का समय निर्धारित करना जरूरी होता है। इन कैंपों में 15 दिनों के तय समय के दौरान ही प्रभावी इलाज की व्यवस्था करनी होती है। क्योंकि इन कैंपों का आयोजन गांवों में किया जाता है, ऐसे में दवाओं व अन्य जरूरी चीजों की व्यवस्था यहां आसानी से नहीं हो सकती। ऐसे में दिक्कत रहित और आसान आयोजन के लिए कैंप से पूर्व सावधानी पूर्वक ढांचागत योजना तैयार करनी होती है।

कैंपों के आयोजन से पूर्व 15 दिनों के कार्यक्रम को इस प्रकार से तय किया जा सकता है:-

**1. आने वाले पहले दिन के लिए:**

अगर कैंप की जगह सड़क मार्ग से तीन घंटे की दूरी पर स्थित है, तो एंबुलेंस वैन व सामान को सुबह ही स्टाफ के साथ भेजा जा सकता है। अगर यह दूरी तीन घंटे से अधिक की है, तो एक दिन पूर्व ही कैंप से जुड़े सामान को भेजने की सलाह दी जाती है।

कैंप के पहले दिन निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है:

कैंप का सामान तय स्थान पर अलग से रखने की व्यवस्था की जाती है।

डिटाक्सिफिकेशन के लिए जरूरी दवाओं और उपकरणों को उचित स्थान पर रखा जाता है। जरूरी उपकरणों में आक्सीजन सेलेंडर, बीपी एप्रेटस, वेटिंग मशीन व ग्लूकोमीटर शामिल होते हैं। फिर थैरी से जुड़ा सामान आता है। इसके अलावा खाना बनाने का सामान, पूजा की वस्तुएं, खेल का सामान और स्टेशनरी शामिल होती है।

यह सारा सामान पहले दिन ही जांचना पड़ता है और यह जानना जरूरी होता है कि कैंप से जुड़ी सभी वस्तुएं सेंटर से यहां तक पहुंचाई जा चुकी हैं या नहीं। इसके बाद बारी आती है राशन, सब्जियों और दूध की। ये सारा सामान भी खाने की व्यवस्था के लिए जरूरी होता है। इस सामान को कैंप में खाना बनाने की जगह तक पहंचाने के साथ ही सुरक्षित रखने की भी जरूरत होती है, ताकि यह खराब ना हो पाएं। सब्जियों की उपलब्धता के अनुसार खाने का मेन्यू भी तैयार करना पड़ता है। खाना स्थानीय प्रचलन को ध्यान में रख कर बनाना होता है। इसके अलावा कैंप में विभिन्न धर्मों के लोगों के अनुसार उनके आराध्य के चित्र या चिन्हों की व्यवस्था जरूरी होती है। कैंप शुरू होने से पहले मरीजों से उनके आराध्य की प्रार्थना करवाना भी कैंप का हिस्सा होता है।

खाने की व्यवस्था करना:

कैंप के आयोजन में अन्य व्यवस्थाओं के अलावा खाने की व्यवस्था भी अहम होती है। मरीजों से जुड़े क्षेत्र के प्रचलन के हिसाब से खाने का मैन्यू बनाना जरूरी होता है, ताकि उन्हें खाने को लेकर कोई शिकायत न हो। इसके अलावा खाने व चायपान का समय भी निर्धारित करना जरूरी होता है। इससे कैंप के दौरान मरीजों व स्टाफ को खाने व चायपान को लेकर कोई चिंता नहीं रहेगी। लिहाजा चाय, ब्रेकफास्ट, हलुआ/दलिया, लंच व डिनर की समयसारिणी बनाकर सूचना पट पर लगाना जरूरी होता है। नशे की दवा लेना आरंभ करने के बाद मरीजों की भूख बढ़ती है। ऐसे में उन्हें खाने के समय के बीच में दिन में दो बार हलवा या दलिया खिलाना अच्छा रहता है।

पहले दिन की शाम का कार्यक्रम:

कैंप के पहले दिन की शाम को कैंप की शुरुआत मरीजों व स्टाफ में जानपहचान से होती है। फिर कैंप का काउंसलर सभी को कैंप के रूल्स व रेगुलेशंस के बारे में विस्तार से बताता है।

इस दौरान मरीजों को कार्यक्रम का समय बातने के साथ ही निम्न हिदायतें दी जाती हैं:- कैंप में पूरे समय के दौरान कोई भी बाहर नहीं जाएगा, मरीज के परिवार की उपस्थिति जरूरी होगी, धूम्रपान प्रतिबंधित होगा, कैंप के स्थान को साफ-सुथरा रखना होगा, बाहर से कोई भी खाने की वस्तु नहीं लाई जाएगी, सिर्फ बिस्कुट व फल ही बाहर से आ पाएंगे, सभी मरीजों के लिए ड्रैस कोड होगा, उन्हें धोती या पैंट पानी होगी, दोपहर को कोई नहीं सोएगा, किसी भी समस्या के लिए काउंसलर या नर्स को सूचित करना होगा/भले ही आधी रात को ही कोई समस्या हो, मरीज अपने पास कैश व अन्य कीमती वस्तुएं नहीं रखेगा और कैंप में मोबाइल फोन प्रतिबंधित होगा।

मरीजों को दिन भर की क्रियाओं से जुड़े उनके दायित्व भी निर्धारित कर दिए जाते हैं। इनमें प्रर्थना सभा का आयोजन करना, प्रत्येक सत्र में घंटी बजाना, खाना व नाश्ता परोसना, खाने के कमरे व सोने के क्षेत्र की सफाई करना इत्यादि शामिल होता है। इसके लिए तीन-तीन के ग्रुप बनाकर उनकी ड्युटी तय की जाती है। दिन भर की रूटीन की समय सारिणी बनाई जाती है।

**2 कैंप का दूसरा दिन:**

कैंप के दूसरे दिन मरीजों को उनके द्वारा भरे जाने वाले विभिन्न फार्मों के बारे में बताने के साथ ही इन्हें भरवाया जाता है। उनके परिजनों को कैंप के नियम कायदे बताए जाते हैं।

घरों का दौरा करना: कैंप के दूसरे दिन विशेषज्ञों की टीम पूर्व के कैंप में शामिल मरीजों के घरों का दौरा करती है। इस दौरान उन मरीजों को प्राथमिकता दी जाती है, जो ठीक नहीं हो पाए हैं और फिर से शराब पीने लगे हैं। साथ ही उन मरीजों के घरों का निरीक्षण किया जाता है, जिनके ठीक होने या दोबारा से शराब पीने को लेकर कोई सूचना नहीं है। जो कैंप के बावजूद ठीक नहीं हो पाए हैं, उन्हें दोबारा कैंप में शामिल होने को प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसे मरीजों की जांच के बाद स्थानीय डाक्टर उन्हें आवश्यक दवाएं देता है और उन्हें कैंप के पांच सत्रों में अस्थाई मरीज के तौर पर भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है।

**3. कैंप का चौथा दिन:**

कैंप के चौथे दिन काउंसलर मरीजों व उनके परिजनों को शराब की लत छुड़ाने की दवाई डिसुलफिरम खाने के लाभ के बारे में बताते हैं। साथ ही उन्हें यह भी बताया जाता है कि यह दवा खाने के बाद शराब पीने से क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं। यह दवा मरीज को उसके परिजनों के सामने खिलाई जाती है। इस दौरान मरीज के परिजनों या मरीजों से उनकी सहायता के लिए दो स्पोर्ट पर्सन्स के नाम लिए जाते हैं, जिन्हें बाद में बुलाकर मरीज को उनके हवाले करने से पूर्व जरूरी हिदायतें दी जाती हैं।

**4. कैंप का सातवां दिन:**

कैंप के सातवें दिन प्रत्येक मरीज के दोनों स्पोर्ट पर्सन्स को बुलाया जाता है। उनके लिए दो घंटे का एक सत्र आयोजित किया जाता है। काउंसलर उन्हें व्यक्तिगत तौर पर बुलाकर उनके मरीज से जुड़ी कुछ अहम जानकारियां देता है और उसके लिए जरूरी सहायता के बारे में बताता है। प्रत्येक मरीज की देखभाल की जरूरत अलग होती है।

**5. कैंप का आठवां दिन:**

कैंप के आठवें दिन या सामान्यत: रविवार को पहले आयोजित किए गए कैंप में शामिल मरीजों व उनके परिजनों के लिए एक मिलन समारोह का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए उन्हें दो सप्ताह पूर्व निमंत्रण भेजे जाते हैं। इसमें मेजवान संगठन, चिकित्सक व अन्य स्टाफ सहित गांव के अन्य गणमान्य लोगों को भी इसमें बुलाया जाता है। इस कार्यक्रम में उन मरीजों को सम्मानित किया जाता है, जो इलाज के एक साल बाद तक शराब के नशे के बगैर रह रहे हैं। आयोजक ऐसे मरीजों के बारे में सभी को बताते हैं और ठीक हुए मरीज भी इलाजरत मरीजों को अपने सामने आई दिक्कतों व उससे जुझने के उसके इरादे के बारे में बताकर उनका हौसला बढ़ाते हैं।

**6. कैंप का चौहदवां दिन:**

कैंप के चौहदवें दिन यानि कैंप के आखिरी दिन से पूर्व उन लोगों को सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने कैंप के सफल आयोजन के लिए अपनी सेवाएं प्रदान कीं। इसके अलावा इस अवसर पर आयोजक संगठन के प्रमुख, कैंप के डाक्टर, सामुदायिक कार्यकर्ता, अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित आयोजन स्थल के इंचार्ज को भी गिफ्ट देकर सम्मानित किया जाता है।

**7. कैंप का पंद्रहवां/आखिरी दिन:**

कैंप के आखिरी दिन मेजबान संगठन के प्रतिनिधि और समाज के प्रमुख सदस्य एकत्रित होकर मरीजों को विदाई पार्टी देते हैं। इस दौरान मरीजों को लेने पहुंचे उनके परिजनों को संबोधित करके सुखद भविष्य की कामना की जाती है। मरीजों को भेजने से पहले उन्हें एक माह की दवाएं दी जाती हैं, साथ ही उन्हें दोबारा जांच के लिए फालोअप तिथि भी दी जाती है। इसके बाद सेंटर से कैंप में लाए गए सामान की लिस्ट चैक करके सामान वापस भिजवाया जाता है।

# पति की मौत के बाद संभली तो एचआईवी ने घेर लिया

## सीएससी हमीरपुर की मदद से मिली जलवाहक की नौकरी

सोनिया (काल्पनिक नाम) 38 वर्ष की एक नौकरीपेशा महिला है। वह हमीरपुर जिला के एक कस्बे की रहने वाली है। उसके पति की मौत दस वर्ष पूर्व अचानक किसी अनजान बीमारी के कारण हो गई थी। यह बीमारी क्या थी, न तो सोनिया को और न ही उसे परिजनों को इसका अंदाजा था। जब पति का देहांत हुआ तो उसकी गोद में पांच साल का एक बच्चा भी था।

पति चालक था और उसकी कमाई से घर का खर्च व सोनिया का परिवार हंसी खुशी चल रहा था। जैसे ही पति ने साथ छोड़ा तो सोनिया पर अपने साथ-साथ बच्चे के पालन-पोषण व पढ़ाई-लिखाई की जिम्मेवारी भी आ गई थी। चुल्हे चौके के अलावा बाहर कही काम नहीं किया था। इतनी पढ़ी लिखी भी नहीं थी कि कोई नौकरी मिल जाए। लिहाजा उसने मेहनत मजदूरी कर के परिवार चलाना शुरू किया। उसका साथ उसके पिता ने भी दिया। वे भी उसकी आर्थिक मदद कर दिया करते थे। इस बीच जैसे-तैसे चार-पांच साल गुजर गए। सानिया भी परिवार चलाने के लिए मेहनत-मजदूरी की आदी हो गई थी। उसका बेटा भी स्कूल जाने लगा था और धीरे-धीरे कक्षाओं में आगे बढ़ता गया। वर्ष 2010 में अचानक सोनिया की तबीयत खराब रहने लगी। जब बीमारी काबू में नहीं आए तो डाक्टर ने उसे अपनी जांच करवाने को कहा। जब उसने अपने रक्त की जांच करवाई तो पता चला कि वह एचआईवी पाजिटिव है। यह बात सुनते ही उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वह इस बात को लेकर परेशान हो गई कि वह अपना इलाज कैसे करवाएगी और बेटे की पढ़ाई व परवरिश कैसे हागी। अब उसे एक बात पता चली कि उसे पति की मौत अचानक किस अनजान बीमारी के कारण हो गई थी।

इस बीच वह एचआईवी वायरस से लड़ाई लड़ने की तैयारी में जुट गई। परामर्शदाताओं ने उसे इस बीमारी की स्थिति व इलाज के बारे में बताया, तो वह कुछ समझी और उसमें जीने की चाह जगी। परामर्श के चलते वह कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर तक पहुंची और वहां के काउंसलर से मिलकर अपनी स्थिति बताई। यहां उसे बताया गया कि वह किस तरह समाज के साथ जुड़ कर अपना व अपने बच्चे का जवीनयापन कर सकती है। सीएससी के काउंसलर की सलाह पर वह अपनी पंचायत के प्रधान से मिली और उसे अपनी स्थिति से अवगत करवाते हुए सहायता की गुहार लगाई। पंचायत प्रधान ने उसकी हालत समझी और उसकी मदद करते हुए करीब डेढ़ वर्ष पहले उसे पंचायत के एक स्कूल में जलवाहक की नौकरी पर रखवा दिया था। इसके चलते उसकी आर्थिक स्थिति कुछ मजबूत हुई और वह अपने पैरों पर खड़े होकर अपना व अपने बेटे का भरन-पोषण करने लगी। अब उसका बेटा 15 वर्ष का हो चुका है और वह भी पूरी तरह ठीक है। उसके लिए राहत वाली बात यह थी कि उसका बेटा एचआईवी के संक्रमण से प्रभावित नहीं हुआ था। एक जानलेवा बीमार से जुझ रहे सोनिया को समाज से ही नहीं अपने परिवार से भी पूरी मदद मिली।

इसी कारण वह आज एक कामकाजी महिला की तरह जीवन व्यतित कर पा रही है। वह संयुक्त परिवार में रहती है और परिवार के हर छोटे-बड़े कार्य में वैसे ही हाथ बंटाती है, जैसे कि सामान्य परिवार में एक गृहणी करती है। उसको हुए संक्रमण से किसी को भय नहीं है। वह अब जानती है कि उसे किस प्रकार से अपना इलाज करवाना है और परिवार को उससे किसी प्रकार का खतरा नहीं है। वह एआरटी हमीरपुर में परामर्श व दवा लेने जाती है और इस दौरान सीएससी हमीरपुर में भी आना नहीं भूलती।

यहां आकर वह यह बात कहना नहीं भूलती कि किस तरह सीएससी के सही परामर्श व छोटे से पर्यास के कारण उसकी जिंदगी कैसे बदल गई। अब वह समाज में खुद को अकेला नहीं समझती और खुशी पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रही है।

# बैंकिंग एग्जाम की तैयारी के लिए अपनाएं ये टिप्स

बैंकिंग सेक्टर देश के सबसे अधिक फलने-फूलने वाले सेक्टर्स में से एक है। शहरों में तो इनकी जड़ें काफी गहरी हो चुकी हैं, पर गांवों में बैंक को अभी पैठ बनाना बाकी है। वैसे इसकी तैयारी शुरू हो चुकी है। यही वजह है कि इस सेक्टर में भर्ती भी जबर्दस्त तरीके से हो रही हैं। इस क्षेत्र में बड़े स्तर पर नौकरियां निकल रही हैं। राष्ट्रीकृत बैंकों,पीएनबी, आईबीपीएस, एसबीआई, आरबीआई सहित निजी व सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य सभी बैंकों में हर साल हजारों की संख्या में रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया होती है। ये बैंक प्रोबेशनरी ऑफिसर समेत बैंक क्लर्क की भर्ती परीक्षा आयोजित करवाते रहते हैं। बैंकों में भर्ती प्रक्रिया का क्रम पूरा साल जारी रहता है, कभी कोई बैंक तो कभी कोई अपने यहां भर्ती के लिए परीक्षा आयोजित करवाता रहता है। लिहाजा बैंकिंग क्षेत्र में रोजगार तलाशन के कई अवसर आपके समक्ष मौजूद है। बस जरूरत है, इनकी भर्ती परीक्षा की तैयारी व लग्र की। हम आपको बैंकिंग क्षेत्र में जाब के लिए एक्सपर्ट्स के जरिये तैयार किए गए कुछ टिप्स बता रहे हैं। इसके जरिये आप बैंकिंग क्षेत्र में रोजगार पाने में सफल हो सकते हैं।

## कैसे करें तैयारी ?

अधिकतर एक्सपर्ट्स का कहना है कि सेट प्रैक्टिस से बेहतर कोई दूसरा विकल्प नहीं हो सकता। बैंकिंग और दूसरे काम्पिटिटिव एग्जाम्स की तैयारी कराने वाली एक संस्था के डेप्युटी मैनेजर बताते हैं कि स्टूडेंट्स के लिए यह जरूरी है कि वह सेट प्रैक्टिस करें। खासकर पिछले सालों में पूछे हुए प्रश्नों को जरूर बनाएं, मगर इसके लिए जरूरी है कि आपका कान्सेप्ट जरूर क्लियर हो। कान्सेप्ट क्लेयर किए बिना आपकी हर प्रकार की तैयारी परीक्षा में आपके मन मुताबिक नतीजा नहीं ला पाती। लिहाजा कान्सेप्ट पर ध्यान देना जरूरी है।

> पिछले सालों में पूछे हुए प्रश्नों को जरूर बनाएं, मगर इसके लिए जरूरी है कि आपका कान्सेप्ट जरूर क्लियर हो। कान्सेप्ट क्लेयर किए बिना आपकी हर प्रकार की तैयारी परीक्षा में आपके मन मुताबिक नतीजा नहीं ला पाती। लिहाजा कान्सेप्ट पर ध्यान देना जरूरी है।

## इंटरव्यू में क्या करें ?

जब आप मेन्स एग्जाम पास करेंगे तो आपको इंटरव्यू देने का मौका मिलेगा। इंटरव्यू की तैयारी आपको पहले से ही करनी होगी। इसके लिए किसी कोचिंग की मदद ले सकते हैं। वहां मॉक इंटरव्यू से आपको जरूर फायदा होगा। साथ ही आपने जिस सबजेक्ट से ग्रैजुएशन या मास्टर की डिग्री ली है उसके बेसिक्स जरूर याद रखें। इंटरव्यू के दौरान सहज रहें, ड्रेस कोड का ध्यान रखें। इंटरव्यू बोर्ड को उलझाने की कोशिश न करें। जिस दिन इंटरव्यू हो उस दिन का अखबार और न्यूज जरूर देखकर जाएं।

## कोचिंग कितनी फायदेमंद ?

बैंकिंग की तैयारी के लिए कोचिंग फायदेमंद जरूर होती है, मगर इसके लिए यह जरूरी है कि आपकी खुद की तैयारी अच्छी हो ताकि जब कोचिंग में जाएं तो फायदा हो। अपनी तैयारी नहीं होने से क्लासरूम में आप कई बातों को समझ नहीं पाएंगे और कोचिंग की गति से चल नहीं पाएंगे। आपका वक्त और पैसा दोनों जाया जा सकता है। वैसे यह ध्यान रहे कि कई बच्चे बगैर कोचिंग के भी रिजल्ट देते हैं।

## ऑनलाइन सेट प्रैक्टिस

आजकल बैंकिंग समेत कई परीक्षाओं के टेस्ट ऑनलाइन हो गए हैं, इसलिए कंप्यूटर पर सही ढंग से सेट बनाना, खासकर ऑनलाइन सेट प्रैक्टिस आपको एग्जामिनेशन हॉल में सुरक्षित करती है। आपमें विश्वास भी जगता है कि आप इसे क्वॉलिफाई कर सकते हैं। वैसे तो कई ऑनलाइन वेबसाइट्स हैं जो बैंक पीओ की तैयारी करवा रहें हैं। कई साइट्स हैं जिनसे जुड़कर आप ऑनलाइन प्रैक्टिस कर सकते हैं।

## स्पीड बढ़ानी जरूरी

बैंकिंग परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए सबसे अधिक जरूरी है कि आपकी गति बेहतर हो। इसके लिए जरूरी है कि आप अगर सेट प्रैक्टिस में 2 घंटे लगाते हैं तो साल्यूशन देखने में 4 घंटे लगाएं ताकि अपकी कमियां दूर हो सकें। ट्रिक्स और शॉर्ट कट्स पर जरूर फोकस करें। उन्हें याद करने की कोशिश करें। साथ ही सवालों के पैटर्न को भी जरूर देखें।

## बुक्स

वैसे तो बाजार में कई पुस्तकें तैयारी के लिए उपलब्ध हैं, कोचिंग के प्रैक्टिस सेट्स भी हैं लेकिन आपके लिए सबसे अहम है, पिछले सालों के प्रैक्टिस सेट को बनाना। साथ ही कुछ बेसिक और ट्रिकी सवालों की किताबें भी जरूर पढ़ें। अगर आपन इन नुस्खों को आजमाते हैं तो निसंदेह आपके लिए बैंकिंग के क्षेत्र में नौकरी पाना कोई मुश्किल काम नहीं होगा।

## एग्जाम हॉल में प्रदर्शन सुधारें

सालभर की परीक्षा का निर्धारण बस दो घंटे में हो जाता है यानी उन २ घंटों में जिसने अपना बेस्ट दिया वह इंटरव्यू के रूम तक पहुंच जाता है। हालांकि इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। एक्सपर्ट्स कहते हैं कि एग्जामिनेशन हॉल में पहले उस सेक्शन को बनाएं जिसमें कम वक्त लगता हो और गलती होने की गुंजाइश कम से कम रहती है। जीएस, कंप्यूटर ऐसे ही सेक्शन हैं। इसके बाद ही इंग्लिश, मैथ्स, रीजनिंग आदि को हल करना चाहिए। सवाल बनाते समय स्टूडेंट्स को यह पता होना चाहिए कि किस सवाल में कितना वक्त लगेगा क्योंकि 120 मिनट में ही आपको 200 सवालों के जवाब देने हैं। हालांकि यह भी सच है कि शायद ही कोई स्टूडेंट हो जिसने सभी 200 सवालों को सॉल्व किया हो इसलिए आपके लिए सवाल सॉल्व करना जितना अहम है, उतना ही जरूरी टाइम टेकिंग सावलों को छोड़ना। तभी आप कम समय में अधिक सवाल हल कर पाएंगे।

## एचआईवी प्रभावितों की बेहतरी के लिए एडवाइजरी मीट आयोजित

हमीरपुर। गुंजन संस्था द्वारा चलाए जा रहे कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर की ओर से एचआईवी/एड्स से प्रभावित लोगों की बेहतरी के लिए एक एडवाइजरी मीट का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पंचायती राज और कल्याण विभाग के अधिकारियों व प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम में एचआईवी/एड्स से प्रभावित मरीजों के सामाजिक अधिकारों व सरकार से मिलने वाली सुविधाओं को उन तक पहुंचाने को लेकर संबंधित विभागों के साथ मंथन किया गया। एसएससी के कोआर्डिनेटर अजय कुमार ने एचआईवी/एड्स प्रभावितों की दिक्कतों के बारे में जानकारी रखी। साथ ही इनके कल्याण से जुड़े विभागों को उनकी मदद के लिए जरूरी कदम उठाने संबंधि आवश्यक सुझाव भी दिए।

इस अवसर पर एडवोकेसी आफिसर सुखविंद्र सिंह ने विहान व ममता कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये कार्यक्रम एचआईवी संक्रमित लोगों की मदद करने, उनकी कठिनाइयों को दूर करके उनके कौशल विकास व रोजगार मुहैया करवाने में सहायता करने सहित विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए चलाए जा रहे हैं। अजय कुमार ने कल्याण विभाग की योजनाओं से अवगत करवाया। उन्होंने ऐसे लोगों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनके कौशल व योग्यता को बढ़ाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने सीएससी की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मौजूदा वर्ष में संस्था की आरे से 123 ऐसे लोगों को सामाजिक कल्याण की योजनाओं से जुड़ने में मदद की गई।

उन्होंने ऐसे लोगों को समाज की मुख्यधारा से जोड़े रखने और उनको अजीविका कमाने व जीवनयापन में होने वाली कठिनाइयों को कम करने की ओर अधिक ध्यान देन की जरूरत बताई। इस अवसर पर मौजूद शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि ने ऐसे लोगों से जुड़ी शिक्षा विभाग की याजनाओं की जानकारी दी। वहीं सीएमओ आफिस की ओर से एआरटी ट्रैव्ल अलाउंस के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने एचआईवी/एड्स संक्रमित लोगों के लिए स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं के बारे में भी विस्तार से बताया।

अजय कुमार ने बताया कि संस्था उन प्रभावितों को भी तलाशने का काम करती है, जो किसी कारणवश कहीं बाहर चले गए या फिर आर्थिक तंगी के कारण सीएससी के संपर्क में नहीं आ पा रहे थे। उन्होंने बताया कि 81 मरीजों को ढुंढ कर उनका इलाज शुरू किया गया और उनकी अन्य प्रकार से मदद की गई।

इस अवसर पर अजय कुमार ने ऐसी 19 महिलाओं की सूची भी अधिकारियों को बताई जो अपनी अजीविका में बढ़ौतरी के लिए विभिन्न कोर्सों में प्रशिक्षण लेने की इच्छुक हैं। इस अवसर पर मौजूद उच्च शिक्षा विभाग के नोडल आफिसर राजेश कुमार ने बताया कि प्रदेश में ऐसी कई योजनाएं हैं, जिसके जरिये उनकी मदद की जा सकती है।

## आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice
& Empowerment

Gunjan
Organisation for Community Development

NISD